HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 3-वैदिक युग का जीवन

- वैदिक सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता का अनुसरण करती थी। भारत में, 1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व के दौरान एक पूरी तरह से नई संस्कृति और सभ्यता का उदय हुआ। देश कांस्य युग से ही संस्कृति और समाज के कई विकासों का पर्यवेक्षक रहा इतिहासकार मानते हैं कि आर्यों के आने से सिंधु और हड़प्पा संस्कृति बर्बाद हो गई। आर्यों के काल को वैदिक काल कहा जाता है। 2000 ई.पू.-1500.ई.पू. उन्होंने अपनी संस्कृति और धर्म का परिचय दिया।
- वैदिक सभ्यता का इतिहास किसी कालखंड की सभ्यता तंत्र, तकनीक और उन उपकरणों को संदर्भित करती है जिनके द्वारा व्यक्ति अपना जीवन जीते हैं और भारत कई सभ्यताओं के लिए एक निवास स्थान रहा है जिन्होंने भारतीय समाज में उल्लेखनीय प्रभाव छोड़ा है। वैदिक काल द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ और लगभग 600 ईसा पूर्व में समाप्त हुआ।

वैदिक सभ्यता में समाज

- वैदिक सभ्यता के दौरान समाज प्रकृति में पितृसत्तात्मक था। महिलाओं की स्थिति बेहद अच्छी है। परिवार की संरचनाएं सख्त थीं। वैदिक लोग आम तौर पर संयुक्त परिवारों की अवधारणा का अभ्यास करते थे। उसी समय इस अवधि का एक सकारात्मक पहलू यह था कि लड़कियों को खुद को शिक्षित करने का अवसर मिला।
- प्रारंभिक आर्य केवल त्वचा के रंग के आधार पर भेदों से परिचित थे, लेकिन वैदिक सभ्यता के बाद के काल में वर्गों के भेद थे। चार वर्ग जो वैदिक समाज का हिस्सा थे, वे ब्राह्मण, **क्षत्रिय, वैश्य और** शूद्र थे और व्यवसायों के संबंध में कुछ निश्चित सीमाएँ थीं। वैदिक युग में आश्रम व्यवस्था की एक पद्धति प्रचलित थी।

- वैदिक जीवन में चार आश्रम शामिल थे और यह कर्म और धर्म दोनों पर उचित विचार प्रस्तुत करने के उद्देश्य से लाये गए थे । वैदिक समाज के आश्रमों को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- वैदिक काल में लड़कियों और लड़कों के उपचार में बहुत अंतर नहीं था। ऋग्वैदिक सभ्यता में खानाबदोश जीवन शैली, सामाजिक जीवन की विशेषता थी। हालाँकि, बाद की वैदिक सभ्यता काफी अलग और विकसित थी। बाद के वैदिक काल को महाकाव्य युग के रूप में जाना जाने लगा। बाद के वैदिक काल के दौरान सामाजिक जीवन में बड़ी आत्मनिर्भर बस्तियां शामिल थीं, जिन्हें योद्धाओं द्वारा संरक्षण प्राप्त था।

प्रशासन की व्यवस्था

- पूर्व वैदिक आर्य जाति में संगठित रहते थे ना की राज्यों के रूप में जाति के मुखिया को राजन कहते थे । राजन की अपनी स्वायत्तता उसकी जाति की सभा में प्रतिबंधित थी जिसे सभा या समिति कहा जाता था ।
- सभा, जाति के कुछ प्रमुख लोगों की होती थी जबकि समिति में जाति का हर एक आदमी होता था ।
- कुछ जातियों के वंशानुगत मुखिया नहीं होते थे और इन्हे जातिय सभा की सरकार द्वारा चलाया जाता था । राजन की प्राथमिक अदालत होती थी जिसमे उसकी जाति के सांसद और जाति के मुख्य लोग (ग्रामणि) शामिल होते थे ।
- राजन का मुख्य कार्य अपनी जाति की रक्षा करना था । उसकी सहायता उसके कई अधिकारियों द्वारा की जाति थी जिसमे पुरोहित, सेनानी(सेना का प्रमुख), दूत और जासूस शामिल थे । पुरोहित समारोह करते थे तथा युद्ध में जीत के लिए और शांति बनाए रखने के लिए मंत्रोच्चारण करते थे ।
- इस युग के रीति-रिवाज राजा के दर्जे को लोगों से ऊपर रखते थे | उसे प्रायः सम्राट कहा जाता था ।
- राजन की बढ़ी हुई राजनीतिक ताकतों ने उसे उत्पादिक संसाधनों पर नियंत्रण करने की ताकत दे दी थी । ऐच्छिक रूप से दिया गया उपहार अनिवार्य भेंट बना दिया गया हालांकि कर के लिए कोई व्यवस्थित प्रणाली नहीं थी ।

वैदिक सभ्यता में संस्कृति

- वैदिक सभ्यता को एक संबद्ध संस्कृति के रूप में पहचाना जा सकता है। इस संस्कृति में मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी हिस्सों का क्षेत्र था।

- वैदिक साहित्य जो मुख्य रूप से वैदिक संहिता या मंत्र सम्बंधित थे ,वेदों की उत्पत्ति मुख्य रूप से वैदिक काल के दौरान हुई थी। जहाँ तक वैदिक साहित्य का प्रश्न है, इसमें कविताओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसके प्रमाण चार वेद थे - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में मिलते हैं। वैदिक साहित्य भारत में साहित्यिक कार्यों का सबसे प्रारंभिक रूप है। इसमें संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद और आर्य शामिल हैं।
- आर्यों के खाने की आदतों के संबंध में, दूध, फल और सब्जियों ने एक महत्वपूर्ण भाग का गठन किया। । आर्यों ने खाने की आदतों के संबंध में, दूध, फल और सब्जियों के एक महत्वपूर्ण भाग का गठन किया। वैदिक काल के लोगों द्वारा पहने जाने वाले परिधान आमतौर पर भेड़ के ऊन या बकरी के बालों से बने होते थे। लोगों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक के तीन भाग होते थे, इस युग के दौरान पुरुषों और महिलाओं दोनों ने पगड़ी का उपयोग किया था। दिलचस्प है कि वैदिक युग के लोग आभूषणों को लेकर बहुत उत्साही थे।

वैदिक सभ्यता में धर्म

- आरम्भिक वैदिक युग के दौरान प्रकृति का महत्व उदार था और इसके लिए आर्य लोग प्रकृति पूजक थे। पृथ्वी, हवा और सूर्य जैसे प्रकृति के तत्वों को व्यक्तिगत किया गया और उन्हें देवताओं के रूप में पूजा गया। आर्यों ने छंदों , बलिदान और जप के माध्यम से धार्मिक अनुष्ठान किए।
- वैदिक सभ्यता के दौरान धर्म प्रकृति में प्रतिष्ठित था और मोक्ष या मोक्ष की अवधारणा अस्तित्वहीन थी। देर से वैदिक काल के दौरान धार्मिक प्रथाओं में बदलाव आया और हिंदू धर्म की ओर बढ़ा। बाद के वैदिक काल के लोगों ने पशुपति, प्रजापति और भगवान कृष्ण जैसे देवताओं की पूजा शुरू कर दी थी। केवल इतना ही नहीं, बल्कि वे कर्म और मोक्ष की अवधारणाओं पर भी विश्वास करने लगे, जिसके आधार पर हिंदू धर्म धीरे-धीरे विकसित हुआ।

राजा और उसके पदाधिकारी

- उत्तर काल का समाज कबीलों या जनजातियों में बंटा हुआ था और प्रत्येक कबीला एक खास प्रदेश में बसा हुआ था। लेकिन ये कबीले अक्सर आपस में लड़ा करते थे।
- इन चरागाहों पर अधिकार करने के लिए कबीलों में लड़ाई होती थी। प्रत्येक कबीले का एक राजा या सरदार होता था जिसे प्रायः उसके बल तथा शौर्य के आधार पर चुना जाता था। बाद में राजपद वंशानुगत हो गया, अर्थात, राजा की मृत्य के बाद उसका पुत्र राजा होता था।

ग्राम

कबीला छोटी-छोटी इकाइयों में बंटा हुआ था, जिन्हें ग्राम कहते थे। प्रत्येक ग्राम में कई परिवार बसते थे। परिवार का समूह कुल या विश कहलाता था। कबीले के लोगों को जन कहते थे।

वैदिक सभ्यता में प्रशासन

- वैदिक सभ्यता के साथ-साथ नए तरीके सामने आए जो अभी भी भारतीय जीवन के लिए अज्ञात थे। उदाहरण के लिए वैदिक सभ्यता का एक महत्वपूर्ण घटक समाज में पदानुक्रम था। राजा समाज का सर्वोच्च शासक था जिसने राज्य पर शासन किया था और उसका कर्तव्य था कि वह अपनी प्रजा की रक्षा करे। राजा के अधीन, समाज की छोटी इकाइयों पर शासन करने वाले ज्येष्ठ थे, जिन्होंने गण पर शासन किया और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि ग्रामणी और विस्पति क्रमशः ग्राम और दृष्टि का ध्यान रखते थे।
- ग्राम और विज़ आर्यन समाज की दो अलग-अलग राजनीतिक संरचनाएँ थीं और संभवतः यह ग्राम वैदिक समाज की सबसे छोटी सामाजिक इकाई थी। आर्यों की राजनीतिक संरचना में महत्वपूर्ण परिषदों के रूप में सभा और समिति थे। दूसरी ओर राजा को पुरोहितों (पादरी) और सेनानी (सेना प्रमुख) द्वारा सलाह दी जाती थी। उस समय के पुरोहितों या पुजारियों ने न केवल राजा को सलाह दी, बल्कि सर्वोच्च शासक के लिए सभी धार्मिक संस्कार भी किए।

वैदिक सभ्यता में अर्थव्यवस्था

- वैदिक सभ्यता के दौरान लोगों के प्राथमिक व्यवसाय अनिवार्य रूप से कृषि और पशु पालन थे। प्रारंभिक अवस्था के दौरान, जैसा कि आर्यों ने भटकने वाले जीवन का नेतृत्व किया, पशुपालन उनके लिए व्यवसाय के रूप में अधिक महत्व रखते थे। बाद के दौर में जब उन्होंने एक व्यवस्थित जीवन जीना शुरू किया तो कृषि को अधिक महत्व मिला और यह उनके निर्वाह का तरीका बन गया। मवेशी पालन जीवन का एक महत्वपूर्ण तरीका है, गाय ने वैदिक लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखा। मवेशी पालन के अलावा गायों को अक्सर विनिमय के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था क्योंकि उस समय के दौरान सिक्कों की अवधारणा प्रचलित नहीं थी।
- हिंदू जीवन शैली में जीवन के वैदिक तरीके के कई तत्वों को शामिल किया गया है। वैदिक सभ्यता को कई आधारों से आधुनिक कहा जा सकता है। यह न केवल अपने दृष्टिकोण में आधुनिक था, बल्कि एक ही समय में यह सौंदर्य से समृद्ध था। यह वैदिक सभ्यता है जिसने भारत को चार वेदों

के रूप में साहित्य का सबसे प्राचीन रूप दिया है। वैदिक सभ्यता ने मौर्य साम्राज्य की तरह भारत की मिट्टी में कई प्रसिद्ध राज्यों को जन्म दिया था। वैदिक काल में विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का उदय हुआ। इस अवधि में सोलह महाजनपदों का भी उदय हुआ। इस प्रकार, वैदिक सभ्यता को हिंदू दर्शन की आधारशिला कहा जा सकता है।